Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. XI, Issue No. XXI, Apr-2016, ISSN 2230-7540

कार्यशील पूँजी का विश्लेषणात्मक अध्ययन (हिन्दुस्तान उनिलीवर लिमिटेड के सन्दर्भ में)

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XI, Issue No. XXI, April-2016, ISSN 2230-7540

कार्यशील पूँजी का विश्लेषणात्मक अध्ययन (हिन्दुस्तान उनिलीवर लिमिटेड के सन्दर्भ में)

Nidhi Patidar[1] Swati Patidar[2]

[1]Research Scholar

[2]Research Scholar

शोध सारांश – *किसी भी संस्था के अंतर्गत कार्यशील पूँजी न तो आवश्यकता से कम होनी चाहिए और न ही आवश्यकता से अधिक होनी चाहिए अतः वित्तीय प्रबंध का संदैव यही प्रयास होता है कि संस्था की आवश्यकता व कार्यशील पूंजी की मात्रा में संतुलन बना रहे तथा कंपनी में कार्यशील पूँजी पर नियंत्रण रखने हेतु कार्यशील, पूँजी का विश्लेषणात्मक अध्ययन और प्रबंधन अति आवश्यक है।*

अध्ययन का प्रारंभ कार्यशील पूँजी की प्रस्तावना साहित्य का पुर्नवलोकन और उद्देश्यों के साथ किया गया है शोध प्रविधि आँकड़ो का विश्लेषण हिन्दुस्तान यूनिलीवर के आय विवरण तथा स्थिति विवरण के आधार पर किया गया है तथा विभिन्न अनुपातों के आधार पर यह प्रस्तुत किया गया है कि किस प्रकार किसी कंपनी में कार्यशील पूँजी की आवश्यक मात्रा को निर्धारित किया जाता है जिससे कंपनी में कार्यशील पूँजी की मात्रा आवश्यकता से कम या अधिक न हो पाये।

शब्द कुंजी – *कार्यशील पूँजी– स्कंध आवर्त, चल संपत्तियाँ, चल दायित्व।*

----------X----------

1. प्रस्तावना –

प्रत्येक व्यावसायिक संस्था को दो प्रकार की पूँजी की आवश्यकता होती है– स्थिर पूंजी व कार्यशील पूँजी। व्यवसाय के संचालन में स्थायी रूप में प्रयोग हेतु कुछ संपत्तियों की आवश्यकता पड़ती है जिन्हें स्थायी संपत्ति कहते है। और इनमें लगायी गयी पूँजी स्थायी या स्थिर पूँजी कहलाती है।

इसके विपरित व्यवसाय के संचालन संबंधी दिन–प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु भी संपत्तियों की जरूरत पड़ती है जिन्हें चल संपत्ति कहते है और इनमें लगायी गयी पूँजी को चालू पूंजी या कार्यशील पूँजी कहते है।

किसी भी संस्था की कार्यशील पूँजी सामान्यतः कच्चे माल के स्कंध में प्राप्त खातो में विक्रय योग्य प्रतिभूतियों में और रोकड़ में विनियोजित होती है इस सभी रूपों में लगायी गई पूँजी सतत रूप में नकद रोकड़ में परिवर्तित होती रहती है।

यदि किसी संस्था की चल संपत्ति चल दायित्व से अधिक है तो कार्यशील पूँजी के दृष्टिकोण से संस्था की स्थिति संतोषजनक व सुदृढ़ मानी जा सकती है। यदि संस्था की चल संपत्ति व चल दायित्व बराबर, है तो यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि संस्था ने कार्यशील पूँजी के लिए पूर्णरूप से अल्पकालीन ऋणों का ही सहारा लिया है और दीर्घकालीन फंड के स्त्रोतों का प्रयोग स्थायी संपत्तियों के क्रय में ही किया है।

यदि संस्था में प्रत्येक समय आवश्यकतानुसार पर्याप्त मात्रा में कार्यशील पूँजी बनी रहेगी, तो संस्था का संचालन भी सफलतापूर्वक सम्पादित किया जा सकेगा और विनियोग पर प्रत्याय को अधिकतम बनाया जा सकेगा।

Working capital = current Assets - current liability

2. शोध विषय के अध्ययन का औचित्य :–

व्यवसाय के अंतर्गत कार्यशील पूंजी की एक पर्याप्त मात्रा अपरिहार्य होती है व्यवसाय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुऐ कार्यशील पूँजी की मात्रा न तो उससे अधिक होनी चाहिए और न उससे कम दोनों स्थितियाँ व्यवसाय के लिए हानिकारक

www.ignited.in

सिद्ध हो सकती है अतः इन सब बातों को ध्यान में रखते हुये इस शोध प्रपत्र हेतु विषय कार्यशील पूँजी का विश्लेषणात्मक अध्ययन हिन्दुस्तान यूनीलिवर के विशेष संदर्भ में लिया गया।

3. शोध साहित्य का पुनरावलोकन –

1. **गंगाधर (1981)** – इन्होंने मध्यम, बड़े और लघु प्राइवेट निजी कंपनियों के बीच कार्यशील पूँजी की स्थिति में सांख्यिकीय प्रवृत्ति का परीक्षण किया तथा पब्लिक लिमिटेड कंपनी की तुलना में प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में चालू संपत्तियों का कुल निवल परिसंपत्तियों से उच्च अनुपातका गठन किया तथा सकल अचल संपत्तियों और मौजूदा परिसंपत्तियों के बीच संबंध को स्पष्ट किया।

2. **घोष (1983)** – इन्होंने भारत में विनिर्माण उद्योग की लालसा हेतु मौजूदा कार्यशील पूँजी का अभ्यास किया तथा यह स्पष्ट किया की अलग – अलग घटकों के कार्यशील पूँजी का प्रबंधन अनियमित या और निर्देशक कंपनियों द्वारा स्वीकार किया जाने वाला संग्रहित तंत्र अनियंत्रित था तथा कंपनियों ग्राहकों से बहुत अधिक समय लेती थी अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ है कि आपूर्तिकर्ता हेतु देयताओं में समानता थी तथा उच्चतम भाग रखते हुऐ प्राप्त अवधि से अधिक लंबित देय के देरी के लिए अनुशंसित अध्ययन की अनुमति दी।

3. **निरंजन देवी के (अक्टूबर 2011)** – इस अध्ययन के अंतर्गत कंपनी के कार्यशील पूंजी आयाम पर प्रकाश डाला गया है इस अध्ययन के परिणाम चार उद्देश्यों को ध्यान में रखकर निकाले गये है– कार्यशील पूँजी की नीतियाँ, कार्यशील पूँजी की संरचना और उपयोगिता तथा कार्यशील पूँजी का लाभदायकता पर प्रभाव इनका परीक्षण किया गया।

4. **पँडा (1986)** – इन्होंने अपने अध्ययन में चालू संपत्तियों फंड के अनुकूलतम विनियोग तथा बिक्री में वृद्धि और कार्यशील **पूँजी** की जरूरत के बीच संबंध का परीक्षण किया अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि कार्यशील **पूँजी** का प्रबंधन नमूना ईकाइयों के बहुमत द्वारा उपेक्षित किया गया था जो कि हानि में वृद्धि को बढ़ावा देता है तथा यह पाया गया की दीर्घकालीन स्त्रोत कंपनियों के लिए अत्यधिक सीमित थे और इसलिए बहुमत लघु उद्योगों की कार्यशील पूँजी जरूरतों को पूरा करने में लघु अवधि ऋण पर निर्भर है।

5. **शिवराम प्रसाद (Mar. 2001)** – इनके अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ की एक उपकार्यशील पूँजी के अनुकूलतम उपयोग तथा किसी अन्य संकेतक की दक्षता से पता चलता है की अध्ययन के अनेक वर्षो में चालू संपत्तियों पर प्रतिफल की दर नकारात्मक थी पूँजी सेवा ऋण भी ठीक तरह से अपने ऋण सेवा देने में सक्षम नहीं थे जिसके परिणामस्वरूप कार्यशील पूँजी में नकदी की कमी और कार्यकुशलता का प्रयोग करके कार्यशील पूँजी पर बेहतर नियंत्रण करने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

4. शोध अध्ययन के उद्देश्य –

1. हिन्दुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड के कार्यशील पूँजी आवर्त का अध्ययन करना।

2. हिन्दुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड की चल संपत्तियों एवं चल दायित्वों की स्थिति का अध्ययन करना।

3. कार्यशील पूंजी के विश्लेषणात्मक अध्ययन के आधार पर कंपनी को आवश्यक सुझाव देना।

5. शोध प्रविधि :–

शोध प्रविधि या प्ररचना अनुसंधान हेतु नील पत्र मानी जाती है इस अध्ययन हेतु द्वितीयक आँकड़ो की प्रकृति विश्लेषणात्मक होगी। विभिन्न द्वितीयक आँकड़ो को समाचार पत्रो, इंटरनेट हिन्दुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड, के वार्षिक प्रतिवेदनों पत्रिकाओं, शोध ग्रंथ विभिन्न स्त्रोतों के माध्यम से एकत्रित किया जायेगा। हिन्दुस्तान यूनीलिवर लिमिटेड के 2011 से 2015 पांच वर्ष के आँकड़ों की सहायता से कार्यशील पूँजी के विश्लेषण हेतु महत्वपूर्ण अनुपातों का निर्धारण किया जायेगा जिसे हेतु कंपनी के लाभ हानि खाते तथा आर्थिक चिट्ठे की सहायता ली जायेगी।

www.ignited.in

6. शोध अध्ययन की सीमाएँ :–

1. यह अध्ययन हिन्दुस्तान यूनीलिवर लिमिटेड के विश्लेषणात्मक अध्ययन पर आधारित है।
2. कंपनी की कार्यशील पूँजी का विश्लेषणात्मक अध्ययन एक जटिल कार्य है।

   अतः इस हेतु आँकड़ों की सत्यता का होना आवश्यक है।
3. इस अध्ययन में कार्यशील पूँजी के विश्लेषणात्मक अध्ययन हेतु द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया जायेगा जो की कंपनी के वार्षिक प्रतिवेदनों से लिये जायेगें।
4. यह शोध कार्य केवल एक कंपनी हिन्दुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड के आँकड़ो पर ही आधारित होगा।

7. हिन्दुस्तान यूनीलिवर लिमिटेड की कार्यशील पूँजी का विश्लेषणात्मक अध्ययनः–

Working Capital Analysis of Hul Ltd.

हिन्दुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड की कार्यशील पूँजी का विश्लेषण अनुपात विश्लेषण के आधार पर किया जायेगा अतः कार्यशील पूँजी के विश्लेषणात्मक अध्ययन हेतु विभिन्न प्रकार के अनुपातो का विवरण निम्न प्रकार स्पष्ट है :–

1. रोकड़ अनुपात (Cash Ratio)
2. तरलता अनुपात (Liquid Ratio)
3. चालू अनुपात या कार्यशील पूँजी अनुपात
4. स्कंध आवर्त
5. कार्यशील पूँजी आवर्त
6. कार्यशील पूँजी का शुद्ध मूल्य से अनुपात

1) रोकड़ अनुपात – यह अनुपात रोकड़ व बैंक के बीच संबंध स्थापित करता है परंतु कार्यशील पूँजी का विश्लेषण करने के लिए इसकी गणना रोकड़ एवं बैंक बाकी तथा चल संपत्तियों के आधार पर की जाती है जैसे :–

$$cash\ ratio = \frac{Cash + Bank\ Balance}{Current\ Assets} \times 100$$

Table – 1

Statement of Cash & Bank Balance to Current Assets

Rs. In crore

Year	Cash & Bank Balance Rs.	Current Assets Rs.	Ratio (%)
2011	1775.68	6646.68	26.71
2012	1996.43	6594.59	30.27
2013	1900.71	7185.65	26.45
2014	2516.03	7812.33	32.20
2015	2689.49	8068.41	33.33

Source : Annual Report of Hul 2011 to 2015

निर्वाचन :– हिन्दुस्तान यूनीलिवर लिमिटेड की तालिका क्रमांक 1 में रोकड़ व बैक बाकी तथा चल संपत्तियों की बीच संबंध को दर्शाया गया है जिसमें प्रतिशत के रूप में उतार–चढ़ाव की स्थिति दिखाई देती है। इसमें चल संपत्तियों की तुलना में रोकड़ की मात्रा अधिक है या कम यह दर्शाया गया है। वर्ष 2011 में यह अनुपात 26.71 प्रतिशत है जो 2012 में पुनः बढ़कर 30.27 प्रतिशत हो गया तथा 2013 में 26.45 रहकर 2014, 2015 में 32.20 और 33.33 हो गया।

2) तरलता अनुपात :– इसे Liquid Ratio या Acid Test Ratio या Near Money Ratio भी कहते है। यह अनुपात चालू अनुपात के परिपूरक रूप में प्रयोग किया जाता है।

सूत्र :– $\text{Quick Ratio} = \frac{\text{Liquid Assets}}{\text{Current Liabilities}} \times 100$

Table – 2

Statement of Liquid Assets to Current Liability

Rs. in Crore

Year	Liquid Assets Rs.	Current Liability Rs.	Ratio (%)
2011	2738.97	5864.81	46.70
2012	2853.17	5739.90	49.70
2013	2897.24	6482.97	44.69
2014	3547.12	7191.63	49.32
2015	3700.67	6638.69	55.79

Source : Annual Report of HUL 2011 to 2015

निवाचन :– तालिका क्रमांक 2 में तरल संपत्तियों और चालू दायित्वों के मध्य आनुवातिक संबंध दर्शाया गया है जिसमें प्रतिशत रूप में उतार चढ़ाव की स्थिति दिखाई दे रही है। जो 2011 में 46.70 प्रतिशत था जो बढ़कर 2012 में 49.70 प्रतिशत हो गया तथा 2013 से 2015 तक 44.69 से बढ़कर 49.32 प्रतिशत तथा बढ़कर 55.74 प्रतिशत अधिकतम पर पहुंच गया।

3) **चालू अनुपात या कार्यशील पूँजी अनुपात** :– यह अनुपात चालू संपत्तियों एवं चालू दायित्वों के बीच संबंध स्थापित करता है।

$$\text{Current Ratio} = \frac{\text{Current Assets}}{\text{Current Liabilities}} \times 100$$

Table – 3

Statement of Liquid Assets to Current Liabilities

Rs. in Crore

Year	Liquid Assets Rs.	Current Liabilities Rs.	Ratio (%)
2011	66.46.68	5864.81	113.3
2012	6594.59	5739.90	114.80
2013	7185.65	6482.97	110.83
2014	7812.33	7191.63	108.63
2015	8068.41	6638.69	121.53

Source : Annual Report of Hul 2011 to 2015

निवाचन :– तालिका क्रमांक 3 में कंपनी के चालू संपत्तियों एवं चालू दायित्वों के मध्य संबंध को प्रदर्शित किया गया है जिसमें 2011 से 2015 के मध्य आनुपातिक उतार–चढ़ाव की स्थिति दिखाई दे रही है यह 2011 में अनुपात 113.3 प्रतिशत है जो 2012 में बढ़कर 114.8 प्रतिशत हो गया तथा पुनः 2013 व 2014 में कम होकर 110.83 तथा 108.53 पर पहुँच गया।

4) **स्कंध आवर्त अनुपात** :– यह अनुपात बेचे गये माल की लागत व औसत स्कंध के बीच संबंध बताता है।

सूत्र :– $\text{Stock Turnover} = \frac{\text{Cost of Goods Sold}}{\text{Average Stock}} \text{ or } \frac{\text{Net Sales}}{\text{stock}}$

Table – 4

Statement of Net Sales to Stock

Rs. In Crore

Year	Net Sales	Stock	Times
2011	19908.57	2875.69	6.92
2012	23311.35	2667.37	8.73
2013	26881.24	2705.97	9.93
2014	29066.10	2939.83	9.88
2015	31785.72	2848.79	11.15

Source : Annual Report of Hul Ltd. 2011 to 2015

निवाचन :– तालिका क्रमांक 4 में कंपनी के शुद्ध विक्रय तथा स्कंध के मध्य संबंध को प्रदर्शित किया गया है स्कंध आवर्त 2011 से 2013 तक क्रमशः बढ़ गया है जो 692.30 873.94, 993.40 है तथा 2014 में कम होकर 9.88 हो गया तथा पुनः बढ़कर 11.15: 2015 में हो गया।

5) **कार्यशील पूँजी आवर्त** – यह अनुपात बिक्री और संपूर्ण कार्यशील पूँजी के बीच संबंध स्थापित करता है और अल्प व्यापार व अति व्यापार की स्थिति पर प्रकाश डालता है–

सूत्र– $\text{Working capital turn over} = \frac{sales}{working\ capital}$

www.ignited.in

Table No. 5

Statement of net sales to w.c.

Rs. in crore

Year	Net Sales	Working capital	Times
2011	19908.57	781.87	25.46
2012	23311.35	854.69	27.27
2013	26881.24	702.69	38.25
2014	29066.10	602.70	46.82
2015	31785.72	1429.72	22.23

Source :- Annual Repot of Hul Ltd. 2011 to 2015

निवर्चन :– तालिका क्रमांक 5 में शुद्ध विक्रय तथा कार्यशील पूँजी के मध्य संबंध को प्रदर्शित किया गया है जिसमें कार्यशील पूँजी आवर्त 2011 में 25.46 था जो बढ़कर 27.27 तथा 38.25 2012 व 2013 में हो गया पुनः 2014 में बढ़कर 46.82 हो गया तथा 2015 में सबसे कम स्तर 22.23ः पर पहुँच गया।

6. **कार्यशील पूंजी का शुद्ध मूल्य से अनुपातः** – यह अनुपात कार्यशील पूँजी और स्वामियों के फंड के बीच संबंध बतलाता है।

$$\text{सूत्र} - \frac{working\ Capital}{Net\ worth} \times 100$$

Table No. 6

Statement of working capital to net worth

Rs. in Crore

Year	Working Capital	Net worth	Ratio
2011	781.87	2734.28	28.59
2012	845.69	3680.41	23.22
2013	702.68	2864.10	24.53
2014	620.70	3526.62	17.55
2015	1429.72	4020.97	35.55

Source : Annual report of Hul Ltd. 2011 to 2015

निवाचन – तालिका क्रमांक 6 में कार्यशील पूँजी का शुद्ध मूल्य से अनुपात प्रदर्शित किया गया है जिसमें वर्ष 2011 में अनुपात 28.59ः था जो 2012 वर्ष 2013 तथा वर्ष 2014 में क्रमशः कम हो रहा है तथा 2015 में पुनः बढ़कर 35.55 पर पहुँच गया।

8. निष्कर्ष –

1. हिन्दुस्तान यूनीलिवर लिमिटेड रोकड़ अनुपात से यह ज्ञात है कि कंपनी की वर्ष 2013 में चल संपत्तियों की तुलना में रोकड़ की मात्रा का अनुपात कम हो रहा है अतः कंपनी में चल संपत्तियों की तुलना में रोकड की मात्रा कम है।
2. कंपनी के तरलता अनुपात की स्थिति यह प्रदर्शित करती है, कि चालू दायित्व की तुलना में तरल संपत्तियों का क्या प्रतिशत है यह प्रतिशत प्रतिवर्ष बढ़ रहा है क्योंकि चालू दायित्वों की तुलना में तरल संपत्तियाँ कम है।
3. हिन्दुस्तान यूनीलीवर लिमिटेड का चालू अनुपात या, कार्यशील पूँजी अनुपात प्रारंभिक वर्षो में निरंतर घट रहा है जो कि उचित नहीं माना जाता है।
4. कंपनी का स्कंध आवर्त अनुपात निरंतर बढ़ रहा है जो कि लाभ की स्थिति को प्रदार्शित कर रहा है।
5. हिन्दुस्तान यूनीलिवर लिमिटेड का कार्यशील पूँजी आवर्त अंतिम वर्ष में घट रहा है जो हानि की स्थिति को प्रदर्शित करता है।
6. कंपनी के कार्यशील पूँजी का शुद्ध मूल्य के अनुपात यह प्रदर्शित करता है कि उतार–चढ़ाव की स्थिति उचित नहीं है।

9. सुझाव –

1. कंपनी का रोकड़ अनुपात वर्ष 2013 में कम हो रहा है जो की उचित नहीं है अतः हम यह सुझाव देते है कि कंपनी को इसको बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। जिससे कंपनी के खर्चो के भुगतान हेतु पर्याप्त रोकड़ की मात्रा उपलब्ध हो सकें।

2. कंपनी का तरलता अनुपात निरंतर बढ़ रहा है क्योंकि तरल संपत्तियों की तुलना में चालू दायित्व अधिक है अतः दायित्वों के भुगतान हेतु कंपनी को नकद धन का आयोजन करना चाहिए जिससे संतोषजनक स्थिति निर्मित हो सके।

3. हिन्दुस्तान यूनीलिवर लिमिटेड का चालू अनुपात प्रांरभिक वर्षो में घट रहा है तथा वर्ष 2015 में पुनः बढ़ गया है अतः प्रारंभिक वर्षो में अनुपात को बढ़ाना चाहिए जिससे संस्था में कार्यशील पूँजी की उपलब्धता उचित हो।

4. कंपनी का स्कंध आवर्त अनुपात वर्ष 2014 में घट रहा है अतः हम सुझाव देते है की कंपनी को इसे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। जिससे लाभ अर्जित हो सके।

5. हिन्दुस्तान यूनीलिवर लिमिटेड का कार्यशील पूँजी अनुपात वर्ष 2015 में घट रहा है जिससे कंपनी को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।

6. कंपनी का कार्यशील पूँजी का शुद्ध मूल्य से अनुपात 2014 मे घट रहा है जिससे बढ़ाना चाहिए जिसमें पर्याप्त लाभ हो सके।

10. संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दुस्तान यूनीलिवर लिमिटेड के वार्षिक प्रतिवेदन 2011 जव 2015

2. गंगाधर (1981) अर्न्राष्ट्रीय जर्नल अनुसंधान विकास पेज–262

3. घोष (1983) पन्डा (1986) अर्न्राष्ट्रीय जर्नल अनुसंधान पेज–263

4. वित्तीय प्रबंध साहित्य भवन पब्लिकेशन (1997)

5. डॉ. एस.पी. गुप्ता प्रबंधकीय लेखाविधि साहित्य भवन पब्लिकेशन (2007)

6. डी.डी. शर्मा रिसर्च मैथोलौजी कल्याणी पब्लिशर 2003

7. Websites

(1). www.HUL.co.in

(2). www. google.com

(3). www. money control

www.ignited.in